# Conversation And Dialogues
# वार्तालाप एवं बातचीत

मौखिक अभिव्यक्ति शिक्षण का लक्ष्य छात्र में ऐसी कुशलता उत्पन्न करना है जिससे वह अन्य भाषा के माध्यम से वार्तालाप कर सके। इस दृष्टि से अन्य भाषा-शिक्षण के छात्र को वार्तालाप का विधिवत् अभ्यास कराना आवश्यक है।

भाषा-प्रयोग की दृष्टि से वार्तालाप-अभ्यास दो प्रकार के होते हैं- • नियन्त्रित वार्तालाप और • मुक्त वार्तालाप। • नियन्त्रित वार्तालाप में दी गई रूपरेखा, निर्धारित परिस्थिति तथा विशिष्ट वाक्य-संरचनाओं के आधार पर छात्र को वार्तालाप करने का, क्रमबद्ध वाक्य-रचना का, प्रश्नोत्तर का अभ्यास कराया जाता है।

• स्वतन्त्र वार्तालाप में प्रसंग अथवा परिवेश के अनुसार छात्र को भाषा के प्रयोग की स्वतंत्रता रहती है।

• बातचीत में भाषा का मधुर रूप व्यवहृत होना चाहिए जिससे सुनने वाला का चित्त प्रसन्न हो जाए।

• बातचीत में सुसम्बद्धता अथवा क्रम का होना भी आवश्यक है। कोई बात कही जाये तो उसमें एक तर्कसम्मत क्रम होना चाहिए। बातचीत किसी क्रम से की जाती है तब वह स्पष्ट होती जाती है और सुनने वाला कहने वाला का अभिप्राय समझता जाता है।

वार्तालाप के लिए अध्यापक को उन परिस्थितियों का चयन करना चाहिए जो

Scanned by TapScanner

छात्रों के लिए अधिक स्वाभाविक हो और जिनसे छात्र परिचित हो।

- वार्तालाप में ऐसे वाक्यों को लिया जाए जिनकी प्रतिदिन आवश्यकता होती है। इन वाक्यों को स्मरण रखने में छात्रों को सुविधा होती है तथा भाषा-प्रयोग की दृष्टि से विशेष उपयोगी समझा जाता है।
- वार्तालाप में इन वाक्यों को ऐसे सन्दर्भ में प्रयुक्त किया जाए जिससे इनका अर्थ स्वतः स्पष्ट हो जाए।
- वार्तालाप में स्वाभाविकता तथा सहजता लाने के लिए इन वाक्यों को क्रम से प्रस्तुत करना आवश्यक है। अर्थात इन वाक्यों में सहज क्रमबद्धता होनी चाहिए। सभी वाक्य परस्पर सम्बन्धित और सार्थक होते हैं।

Scanned by TapScanner